चाची चार सौ बीस-3

"जवान चूत जितना पिटती थी उतनी ही और जोर से लण्ड खाना चाह रही थी। मेरे चुदने की तमन्ना चाची ने पूरी करवा दी थी। फिर तो जी भर कर मैंने अंकल का लण्ड खाया और फिर अपने आप को रोक नहीं पाई... ..."

Story By: Yashoda Pathak (missyashoda)
Posted: Saturday, June 19th, 2010
Categories: कोई देख रहा है
Online version: चाची चार सौ बीस-3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

चाची चार सौ बीस-3

अंकल मुझे अपने नीचे दबा कर जोर जोर से चोद रहे थे था। जाने इस जवान चूत में कितनी मस्ती थी जो पिटी जा रही थी और जितना पिटती थी उतनी ही और जोर से लण्ड खाना चाह रही थी।
मेरे चुदने की तमन्ना चाची ने पूरी करवा दी थी।
फिर तो जी भर कर मैंने अंकल का लण्ड खाया और फिर अपने आप को रोक नहीं पाई... एकदम से झड़ने लगी।

मेरे झड़ते ही अंकल ने अपना लण्ड मेरे मुख में ठूंसने की कोशिश की। पर मैंने अपना मुख इधर उधर करके बचा लिया। पर तभी चाची ने जल्दी से अंकल का लण्ड अपने मुख में लेकर जो तीन चार बार कस कर मुठ्ठ मारा, अंकल ने सारा का सारा वीर्य चाची के मुख में दान कर दिया।

मैंने बैठ कर अपनी चूत का गीलापन साफ़ किया और शमीज को नीचे सरका दी।

'चलो अब भोजन कर लें?' चाची बोली।

'मेरा तो हो गया ना भोजन !' मैंने कुछ इठलाते हुये और कुछ ठसकते हुये कहा।

उंहु, ये तो चोदन था, भोजन वहाँ मेज पर !' चाची ने शरारत से मेरी चूची दबा कर बाहर की ओर इशारा किया।

वहाँ सभी ने बैठ कर एक एक व्हिस्की का पेग और पी लिया। इसी दौरान चाची ने मुझे अंकल का लण्ड भी चुसवाया... अंकल ने मेरी चूत चूसी। फिर हमने अपना रात्रि भोज किया।

‘अच्छा तो मैं चलता हूँ…’ राजेश उठते हुये बोले।

‘चाची, रोकिये ना इन्हें… मेरे मुख से अपने आप निकल पड़ा। फिर एक दम से शरमा गई।

‘देखो, क्या कह रही है आपकी यशोदा… ‘ चाची ने राजेश को आँख मारते हुये कहा।

‘फिर रात अधिक हो जायेगी।’ राजेश ने अपनी मजबूरी जताई।

‘तो क्या हुआ, घर में ही तो है न… चलो ना अन्दर कमरे में… ‘ मेरे मुख से निकल पड़ा।

‘अब आपको तो मैं मना तो नहीं कर सकता हूँ ना।’

हम सभी बेड रूम में आ गये थे। चाची ने भी बस एक चड्डी पहन ली और हम तीनों बिस्तर पर आ गये।

‘चाची अंकल से दूर रहो ना ।’ मैंने चाची से जलते हुये कहा।

‘चिपकी तो तू जा रही है और मुझ से कह रही है… ‘ चाची ने ताना मारा।

‘तो चिपकने दो ना चाची… मेरा तो यह पहली बार…!’ मैंने शरमा कर अंकल की छाती में सर छुपा लिया।

‘तो चिपको ना… ‘ चाची चिढ़ कर बोली… ‘समझ लो हम तो जैसे यहाँ है ही नहीं।’

‘सॉरी चाची, ये लो बस…’ मैंने दूर हटते हुये कहा।

मैंने दूसरी ओर करवट ले ली और सोने का प्रयत्न करने लगी। पर नींद तो आँखों से कोसों दूर थी। एक लण्डधारी मर्द मेरी बगल में लेटा था और दो दो जवानियाँ उससे चुदने को बेताब थी।

जैसे तैसे मेरी आँख लग गई थी। पर फिर जाने कब मेरी आँख खुल गई। अंकल मेरी पीठ से चिपके थे। उनका सख्त लण्ड मेरी गाण्ड की फ़ांकों में फ़ंसा हुआ था।

'नंगा लण्ड... नग़ी गाण्ड... ' उफ़ !कैसा लग रहा था।

'श श श... बोलना मत... ' प्रियंका जाग जायेगी।

मैंने अपने आप को और व्यवस्थित करके उसके लण्ड को और भी गाण्ड के छेद से सटने का मौका दिया। अंकल ने प्यार से अपनी बाहें मेरे तन के इर्द गिर्द डाल दी और मुझे कस लिया। वे मेरे गालों को चूमने लगा फिर मुझे अपनी गाण्ड के छेद में उसका लण्ड घुसता सा लगा। मैंने अपनी गाण्ड और ढीली छोड़ दी। वो और अन्दर घुस गया।

'ओह... अन्दर गया।'

'हाँ अन्दर तो घुस गया है... पर बहुत अजीब सा लग रहा है, मोटा बहुत है।'

'श श... अब सब ठीक है !'

फिर उसने धीरे से और जोर लगाया। लण्ड उस छोटे से छेद के लिये बहुत मोटा था। मैंने जैसे तैसे सहन कर लिया। उसने फिर दबाव डाल दिया। लण्ड और अन्दर घुस गया। दर्द के कारण मेरे मुख से चीख निकल गई। चाची की नींद खुल गई।

'अरे, क्या हुआ मेरी यशोदा को ?'
'चाची, देखो ना !अंकल ने मेरी गाण्ड मार दी।'

'आय हाय, साले मरे ने बच्ची की गाण्ड मार दी... चल निकाल अपना लौड़ा बाहर !'
'अरे, बस हो गया प्रियंका।'

‘क्या खाक हो गया… मैं मर गई थी क्या… मेरी गाण्ड चोद देता… उस बच्ची की गाण्ड फ़ट गई तो… ?’

‘चाची, रहने दो… शायद ठीक से मार दे… कोशिश करती हूँ… ‘ मैंने अंकल की तरफ़दारी की।

‘अरे गाण्ड में तेल या क्रीम लगाई थी या नहीं… या सूखी सूखी गाण्ड मार रहा है ?’

राजेश ने जल्दी से अपना लण्ड बाहर निकाल लिया और अपने सिरहाने क्रीम उठा कर प्रियंका को दे दी।
चाची ने ठीक से पहले राजेश के लण्ड पर क्रीम लगाई फिर मेरी गाण्ड को खोल कर छेद पर क्रीम लगा दी।
चाची ने जब अपनी अंगुली से क्रीम गाण्ड के अन्दर बाहर क्रीम लगाई तो मुझे बहुत आनन्द आने लगा।

‘चाची, बहुत मजा आ रहा है। ये ले तू भी राजेश की गाण्ड में क्रीम लगा कर देख।’

मैंने क्रीम ले कर राजेश की गाण्ड में अंगुली डाल कर क्रीम लगाई तो उसके मुख से सिसकी निकल पड़ी।

‘आह… यशोदा बहुत आनन्द आ रहा है… और कर यार जल्दी जल्दी कर !’

‘यशोदा… इसकी गाण्ड ही मार दे अपनी अंगुली से… ‘

खूब देर तक राजेश अपनी गाण्ड में क्रीम लगा कर अंगुली से करवाने का आनन्द लिया। फिर राजेश ने मेरी गाण्ड को सेट किया।

‘आह… चाची, यह तो एक ही बार में घुस गया… पूरा घुसा दो अंकल !’

पर राजेश को तो अब मेरी गाण्ड चोदने में आनन्द आने लगा था। वो मेरी गाण्ड के साथ बहुत देर तक धक्कम पेल करता रहा।

इधर चाची मौका पाकर मेरे पास आकर मेरी चूत को चूसने लगी। दोनों तरफ़ से मार खा कर मैं तो निहाल हो उठी। मैं एक बार फिर से झड़ने लगी… अंकल भी मेरी गाण्ड में ही झड़ गये।
झड़ने के बाद जाने कब मेरी आँख लग गई और मैं सवेरे देर तक सोती रही। मैं उठी तब दोनों चाय की मेज पर चाय व नाश्ता सजा रहे थे।

दोनों बातें कर रहे थे। मैंने उनकी बाते सुनने की कोशिश की।

'कैसा आनन्द आया कल !है ना राजेश ?'

'प्रियंका, तुमने भी तो यशोदा को कैसे लपेटे में ले लिया।'

'अरे यशोदा जैसी लड़कियों को पटाना तो मेरे बायें हाथ का खेल है।'

'वो कैसे ?'

'एक तो जवानी का नशा… फिर उसे अपनी चुदाई का जलवा भी दिखा दिया था… फिर उसे यकीन दिलाना कि चुदाई करवा के देख !मजा ही मजा है… '

'तो अगली बार किसका नम्बर लगवा रही हो… ?'

यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं।

'अभी तो मेरी यशोदा रानी का मजा पूरा मजा तो ले लो… लड़किया तो दुनिया भर में भरी पड़ी हैं।'

मेरी तो जैसे झांटें सुलग उठीं। साली मक्कार ! देखो तो कैसी शेखी बघार रही है... उंह ! मुझे चुदवा देगी... जैस इसके बाप का माल है... साली 420... मेरी चूत में तो पहले से ही आग भरी हुई थी... ना कहती तो भी भी मुझे तो चुदना ही था... समझती क्या है, साली... क्या चूत सिर्फ़ उसी के पास है। फिर मैंने अपने आप को सम्भाला।

फिर मैंने कमरे में दाखिल होते हुये बहुत ही शरमाने का अभिनय किया।

'चाची, सॉरी कल के लिये... पता नहीं मुझे क्या हो गया था। अंकल प्लीज सॉरी ना !'

मेरी इस अदा को देख कर अंकल का लण्ड एक बार फिर से खड़ा हो गया।

'अरे नहीं यशोदा... सॉरी नहीं बोल बेटी... ये तो कभी कभी हो जाता है।'

मैंने धीरे से अंकल की तरफ़ देखा और मुस्करा कर शरमा गई।

'मैं अभी आई चाची !'

जैसे ही मैं अपने कमरे की तरफ़ गई। अंकल मेरे पीछे भागे।

'अरे राजेश... चाय तो पीते जाईये...!'

चाची उसके पीछे भागी। कुछ पलों में वो मेरे पीछे के भाग से चिपक गये थे। उसका कठोर लण्ड मेरी गाण्ड में घुसता ही जा रहा था।

'चाची... अरे देखो तो... अंकल ने फिर अपना लण्ड मेरी गाण्ड में घुसेड़ दिया।'

'अब क्या करूँ बेटी... तेरे ये अंकल है ही ऐसे... कैसे रोकूँ इनको। चाची जल भुन कर बोल रही थी।'

पर तब तक तो अंकल मेरी शमीज को उठा चुके थे और मेरी गाण्ड चुदने के तैयार थी...

तो पाठकगण ! आप किस सोच में पड़ गये...

यशोदा पाठक

2518

Other stories you may be interested in

चोदना था बेटी को मां चुद गयी

अन्तर्वासना की सभी चुदासी लड़की, भाभी, आंटी और कहानी पढ़ने वाले सभी चुतों को मेरे खड़े लंड का चोदता हुआ नमस्कार. मेरा नाम संतोष कुमार है, मैं अभी चेन्नई में जॉब करता हूँ और भोपाल का रहने वाला हूँ. अभी […]

Full Story >>>

मेरी क्लास का हैंडसम लड़का – गे स्टोरी

हैलो फ्रेंड्स, उम्मीद है, आप सब लोग ठीक होंगे. सबसे पहले मैं अपने बारे में बता देता हूं, मेरा नाम प्रिंस दीप है. मेरी उम्र 18 साल है, फिजिकली में गोलमटोल हूं. वैसे तो मैं नॉर्मल लड़कों की तरह ही […]

Full Story >>>

पति से परेशान सलहज की चुत मारी

अन्तर्वासना के मेरे प्यारे सभी पाठकों आपको हैरी बवेजा का नमस्कार. पुराने दोस्त तो मुझे जानते होंगे, नये दोस्तों को मैं अपना परिचय दे देता हूँ. मेरी उम्र 35 साल की है. पंजाब का हूँ. बहुत दिनों बाद कहानी लिखने […]

Full Story >>>

अन्तर्वासना पाठक का अजेय लंड

दोस्तो, मैं अर्पिता एक बार फिर हाजिर हुई हूँ मेरी जवानी की प्यास की कहानी लेकर. सबसे पहले तो आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मेरी पहली कहानी मेरी कुंवारी चूत की पहली चुदाई को इतना प्यार दिया. मुझे इतने सारे […]

Full Story >>>

प्यारी बीवी की गांड चोदकर वीर्य भर दिया

नमस्ते दोस्तो, मैं कुमार सोलापुर से आपके लिये हमारी पति पत्नी की चुदाई की और एक नई सच्ची कहानी लेकर हाजिर हुआ हूँ. जिसे पढ़कर आपकी तबीयत जरूर खुश हो जाएगी. हम दोनों पति पत्नी जल्दबाजी में की गई चुदाई […]

Full Story >>>